ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. No.- 146-149

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- IV, Issues-26, YEAR- Oct.-Dec.-2022

रीतिमुक्त कवि बोधा के काव्य में स्वाभिमान की अभिव्यक्ति

राम नरेश यादव

शोध अध्येत्री– पीएच.डी., हिन्दी साहित्य, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

Received-30.10.2022, Revised-06.11.2022, Accepted-10.11.2022 E-mail: yadavramnaresh1991@gmail-com

सारांशः ***रीतिकालीन कवि बोधा ऐसे दौर में कविता कर रहे थे जहां कवि को जीविकोपर्जन के साथ–साथ राजदरबारों में सम्मान भी मिलता था और अपमान भी। मान–अपमान को सहते हुए तमाम कविगण अपने आश्रयदाता के लिए कविताएं लिखते रहे, लेकिन उनमें से तमाम कवि ऐसे भी हुए जिन्होंने कभी भी अपने स्वाभिमान से समझौता नहीं किया। उन्ही में से एक है, बुद्धिसेन (बोधा)। जिनके बारे में इस लेख में चर्चा करेंगे ।***

कुंजीभूत शब्द– रीतिकालीन कवि, जीविकोपर्जन, राजदरबारों, मान–अपमान, आश्रयदाता, स्वाभिमान, अभिव्यक्ति, स्वभाव।

बोधा के काव्य में स्वाभिमान– जब भी किसी व्यक्ति के स्वभाव तथा व्यक्तित्व के बारे में जानना हो तो उनके साथ ज्यादा से ज्यादा बिताया गया समय सबसे प्रमाणिक आधार हो सकता है। इसके अतिरिक्त उस व्यक्ति विशेष के घनिष्ठ मित्रों तथा परिवारीजनों से भी उसके स्वभाव तथा प्रकृति का पता लगाया जा सकता है लेकिन जब किसी कवि के बारे मे जानना हो तो उनके हितैषियों के साथ–साथ उनकी रचनाओं का सहारा लेते हैं। आज न तो हमें बोधा कवि का साथ ही प्राप्त है, न ही उनके किसी हितैषी का। ऐसे में उनके स्वभाव और प्रकृति को जानने का सबसे अच्छा साधन उनकी रचनाएं ही हो सकती हैं। किसी भी कृतिकार के व्यक्तित्व की छाप प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से उसकी कृति पर अवश्य पडती है और इसी के माध्यम से हम उस रचनाकार को थोडा बहुत जान पाते हैं। मनोवैज्ञानिकों ने व्यक्ति के व्यक्तित्व को समझने के लिए चार पक्ष बताए हैं– 1. शारीरिक पक्ष 2. बौद्धिक पक्ष 3. भावात्मक पक्ष 4 चारित्रिक व व्यवहारिक पक्ष।

बोधा के काव्य में स्वाभिमान को स्पष्ट करने के लिए जान लेना जरूरी है स्वाभिमान का क्या अर्थ है। स्वाभिमान का सामान्य अर्थ है– आत्मसम्मान, आत्मगौरव या आत्मसम्मान की भावना, व्यक्तिगत प्रतिष्ठा आदि। इस बारे में हार्वर्ड यूनिवर्सिटी के मनोवैज्ञानिक एलेन जे लैंगर अपनी किताब द पावर ऑफ माइंडफुल लर्निंग में लिखते हैं कि यदि आपमें स्वाभिमान की भावना है, तो यह आपके लिए मानसिक शांति प्राप्त करने की चाबी की भूमिका निभाता है। वास्तव में आप ऊंचा स्वाभिमान रखते हैं, तो किसी के दोषारोपण झूठी शिकायत चुगली की फिक्र नहीं करते। आप इस तरह के व्यवहार पर अपनी प्रतिक्रिया भी नहीं देते। आप खुशहाल संतुष्ट और कामयाब जिंदगी जीते हैं। आपमें आत्मविश्वास दृढ़ता योग्यता महत्वाकांक्षा की चुनौतियों को स्वीकार करने की प्रबल इच्छा होती है। इस संदर्भ में जॉर्ज वॉशिंगटन ने सही कहा है कि अगर आप खुद के मान–सम्मान को महत्व देते हैं तो गुणवान लोगों की संगत में रहें। खराब संगत में रहने से बेहतर है कि आप अकेले ही रहें।

बोधा कवि के काव्य में सबसे अधिक जो तत्व उभर कर आते है, वे हैं स्वाभिमान और प्रेम। बोधा मनमौजी प्रकृति के कवि हैं उनके विषय में डॉ. नगेन्द्र ने लिखा कि– बोधा बेधड़क होकर निसंकोच बात करते हैं। रीतिकाल के उस सामन्तीय वातावरण में, जिसमें आश्रयदाताओं की चाटुकारिता ही राज्याश्रय प्राप्त करने का साधन थी, ऐसे में बोधा के स्वाभिमानी व्यक्तित्व की जितनी प्रसंशा की जाय उतनी कम है। यह ठीक है कि रीतिकाल के विलासी माहौल में बोधा अछूते नहीं थे लेकिन उनकी कृतियों में स्वाभिमान और स्पष्टवादिता की ऐसी झलक दिखाई देती है कि बोधा अपने समान धर्माओं के अपवाद जान पड़ते हैं। उनका यह छंद जिसमें उनका स्वाभिमानी व्यक्तित्व झलकता है, वह कहते हैं कि जो व्यक्ति आप से मेल–जोल का भाव रखे और आपका हितैषी हो उसके प्रति आपको भी उसी प्रकार की भावनाएं व्यक्त करनी चाहिए, जबकि जो व्यक्ति घमण्डी हो उसके प्रति दोगुने अभिमान का प्रदर्शन उत्तम रहता है। इसी प्रकार आपके प्रति विनम्रता और सराहना का भाव रखने वाले के प्रति आपको भी प्रतिदान में ऐसे ही भाव व्यक्त करने चाहिए, परन्तु कोई व्यक्ति कितना भी सूरवीर, सुन्दर अथवा गुणी क्यों न हो, यदि वह आपकी उपेक्षा करता है तो आपको भी उसकी ही नही, उसके बाप की भी उपेक्षा का भाव रखना चाहिए–

हिल मिल जानै तासों हिलि मिलि लीजै आप,
हित कों न जानै ताको हितू न बिसाहिए ।
होय मगरूर तासों दूनी मगरूरी कीजै,
लघु होय चलै तासों लघुता निबाहिए ।
बोधा कवि नीति को निबेरो याही भाँति करौ,
आपकों सराहै ताकों आपहू सराहिए ।

अनुरूपी लेखक / संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- IV, Issues-26, YEAR- Oct.-Dec.-2022

दाता कहा सूर कहा सुंदर सुजान कहा
आपको न चाहै ताके बाप को न चाहिए।

बोधा के स्वाभिमान के विषय में लिखते हुए डॉ. कृष्णचन्द्र वर्मा ने कहा है कि बोधा एक स्वाभिमानी जीव थे। जिस समय सुभान नामक वैश्या के प्रति प्रेम रखने के कारण उनके आश्रयदाता ने उन्हे छह महीने के लिए निर्वासित कर दिया था, उन्होंने राजदण्ड की लेशमात्र भी परवाह नहीं की और वे अपना यह प्रसिद्ध सवैया मौज में पढ़ते हुए राज्य की सीमा के बाहर हो गए–

पक्षिन कौं बिरछा हैं घने बिरछान कौं पक्षियौ हैं बड़े चाहक।
मोरन कों हैं पहार घने औ पहारन मोर रहैं मिलि बाहक।
बोधा महीपन कौं मुकुता औ घने मुकतान के राइ बेसाहक।
जौ धन है तो गुनी बहुतै, अरू जौ गुन हैं, तो अनेक हैं गाहक।

मात्र एक वर्ष के देश–निष्कासन काल में बोधा द्वारा देवगढ़, चांदा, गढ़ामण्डला आदि राजदरबारों मे भटकते रहे, परन्तु बोधा जैसे स्वाभिमानी एवं स्पष्टवादी कवि की जी–हुजूरी चाहने वाले राजदरबारों में गुजर हुई ही नहीं होगी, खेतसिंह के दरबार से निष्कासित बोधा विभिन्न राजदरबारों में गए थे, परन्तु कहीं भी रूक नहीं सके। स्वाभाविक है कि उनके न रूकने का कारण यही रहा होगा कि उन्हें मनोनुकूल सम्मान प्राप्त नहीं हुआ होगा। कवि बोधा लिखते हैं कि–

देवगढ़ चाँदा गढ़ा मंडला उज्जैन रीवाँ,
साम्हर सिरोज अजमेर लैं निहारो जोई।
पटना कुमाऊँ पेषि कुर्रा औ जहानाबाद,
साँकरी गली लौं वारे भूप देखि आयो सोई।
बोधा कवि प्राग औ बनारस सुहागपुर,
खुरदा निहारि फिरि मुरक्यौ उदास होइ।
बड़े–बड़े दाता ते अड़े न चित्त माँहि कहूँ,
ठाकुर प्राचीन खेतसिंह सो लखो न कोइ।

बोधा के काव्य में इस तथ्य का भी प्रमाण मिलता है कि वे अपने आश्रयदाता खेतसिंह के दरबार में भी मात्र अपनी प्रेयसी सुभान के अनुरोध पर ही पुनः लौट आए थे, अन्यथा उन्होंने न लौटने की प्रतिज्ञा कर ली थी–

यौं पुनि गुनि निज चित्त में, लिखि दिय बाला एक।
राहिए खेत नरेश के चरन सरन तजि टेक।

उनके स्वाभिमानी प्रकृति का एक पक्ष प्रेम भी है बोधा छिछले, बाजारू और व्यभिचारी प्रेम पर विश्वास नहीं करते थे। वे एकनिष्ठ और दृढ़ प्रेम के समर्थक थे। उनके सीधे–सरल हृदय में जो सुभान एक बार बस गई, संसार की सुन्दरतम स्त्री भी फिर उसका स्थान नहीं ले सकी। यद्यपि उन्हे स्वयं इस बात का बोध था कि प्रेम का यह मार्ग सरल नहीं है इस पर चलना तलवार की धार पर दौड़ने के बराबर दुष्कर कार्य है। फिर भी आत्मगौरव के साथ एक विश्वास से अपनी प्रेमिका के वियोग के दुःख को मौन होकर सहते रहे–

अति छीन मृनाल के तारहु तें तिहिं ऊपर पांव दै आवनो है।
सुई बेह तें द्वार सकीन तहां परतीति को टांड़ो लदावनों हैं।
कबि बोधा अनी घनी नेजहुं तें चढ़ि तापै ना चित्त डगावनो है।
यह प्रेम को पंथ कराल है जू तलवार की धार पै धावनो है।

विरह की कठिन आग हृदय में जलाए, उसके तीव्र तार को सहते हुए बोधा आंसुओं के समुद्र मे जलोडित– विलोड़ित होते रहे, परन्तु अपनी व्यथा उन्होंने किसी से व्यक्त नहीं की । उनका विश्वास था कि संयोग सुख प्राप्त करने के लिए वियोग की जलन सहनी ही पड़ती है–

दहियै बिरहानल दहन सों निज पापन तापन कों सहियै।
चहिए सुख तौ सहियै दुख को दृगबारि पयोनिधि में बहियै।
कबि बोधा इतै पै हितू ना मिलै मन की मन ही में पचौ रहियै।
गहियै मुख मौन भई सो भई अपनी करि काहू सों का कहियै।।

बोधा की यह धारणा भी उनके स्वाभिमानी प्रकृति का ही हिस्सा है। इसी स्वाभिमान ने इन्हें दीन होकर अपनी व्यथा

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- IV, Issues-26, YEAR- Oct.-Dec.-2022

को किसी से नहीं कहने दिया। यहां तक कि अपनी प्रिया से भी बोधा ने दीनता–पूर्वक प्रेम याचना नहीं की। वे तो बिना ऊंच–नीच विचारे, मात्र इस विश्वास से कि कभी तो उसके हृदय में भी प्रेम पनपेगा, इसीलिए बोधा उससे प्रेम करते रहे। बोधा यहां तक कहते हैं कि–

हमकों वह चाहै कि चाहै नहीं हम चाहियै वाहि जियाहर है।

बोधा के स्वभाव की इस दृढ़ता, गंभीरता, एकनिष्ठता तथा स्वाभिमान ने ही इस मस्त–मौला कवि के व्यक्तित्व को वह अनोखा रंग दे दिया है कि रीतिकालीन कवियों की भीड़ में भी वह अपनी अलग पहचान बनाए रखने में सक्षम हो सके हैं। बोधा बहुत दुखी और परेशानी में भी किसी के आगे हाथ नहीं फैलाना चाहते वे कहते हैं कि–

कोऊ न सहाय कलिकाल में दुखी को आय
कासों कहौं जाय भारी विरह–कलेश को।
देखे राज राय दयाहीन सब ठौर जाय
गिनती कहां लौं आय देसहुं विदेस को।
बोधा कवि ध्याय–ध्याय धाय–धाय परि पाय
भरम गंवाय कीन्हों करम अंदेस को।
काहु के जैहों जैहों आदर न पैहों यातें
चरन गै रैहों मैं तो सरन महेश को।

बोधा एक जिन्दादिल, मनमौजी और स्वछंद व्यक्ति थे वे किसी के दबाव में जीवन नहीं जीते थे। उन्हें न तो किसी राजा का दबाव पसन्द था और न ही समाज का। वे मस्त–मौला जीवन जीते थे। बोधा अनेक राजाश्रयों में रहे लेकिन किसी के यहां डर कर या दबाव में नहीं रहे यही कारण था कि वे बेधड़क होकर अपनी बात कह पाए। उनका मानना था कि परवश जीवन हजार साल जीने से बेहतर है दस दिन मनमौजी जीवन जिएं–

एक बेर मरने परै बोधा यहि संसार।
तौ जैसे दस दिन जियै तैसे वर्ष हजार।

बोधा इतने मनमौजी और स्वाभिमानी जीव थे कि उन्हे लोक–लाज का भय बिल्कुल भी नहीं था । आचार्य रामचन्द्र शुक्ल लिखते हैं कि दृ बोधा कई रीति ग्रंथों में लिखकर अपनी मौज के अनुसार फुटकर पदों की रचना की है । ये मनोयोग के प्रवाह में बहकर कविता लिखा करते थे । वे अपने एक दोहे में कहते हैं कि जिसने कभी उत्तम प्रेम किया ही नहीं वे उसे कैसे समझ सकता है । मैं कुछ भी बोलूँ किसी को क्या लेना–देना मैं तो अपनी मस्ती में मस्त रहता हूं–

जिन चोखौ चाखौ नहीं ते किन पावै चौज।
बोधा चाहे सो बकै मतवारे की मौज।

बोधा का मानना था कि स्वाभिमानी व्यक्ति को कभी चोर, व्यभिचारी, अवगुणी, पापी, गरजमंद, जुआरी या भिखारी नहीं होना चाहिए क्योंकि इस संसार में ऐसे लोगों की सम्मान तथा सहायता कोई नहीं करता है–

चोर को सनेही को है राड़ को सैंधाती कहूं
निर्गुनी को दायक सरोगी को बरा रसी।
निर्धन को व्यौहुरो सपक्षी व्यभिचारिन कौ
औगुन कौ नाहक विड़ब उपचार सी।
बोधा कवि अपनी अनैसी को सहैयै को है।
पापी को सरीक परिपीर को निवारिसी।
गरजी को गरजी निवाज को गरीबन को
ज्वारी को जमानदार भिखारी को सिपारसी।

बोधा की उपर्युक्त काव्य पंक्तियों को पढ़ने के बाद बोधा के स्वाभिमानी व्यक्तित्व की झलक देखने को मिल जाती है। बोधा ने अपनी अनुभूतियों को किसी बाहरी अलंकरण के बोझ से दबाया नहीं है। बोधा सही मायने में स्वच्छंद कवि थे, जो कुछ भी जैसा भी उनके हृदय ने अनुभव किया उसे वैसे ही सीधे सरल रूप में अभिव्यक्त करते गए। इसीलिए अलंकार उनके काव्य में ढूँढने पड़ते हैं, जबकि छंदों का वैविध्यपूर्ण प्रयोग अद्वितीय है। सहज सरल अभिव्यक्ति वाले कवि बोधा व्यक्तिगत जीवन मे अत्यन्त स्वाभिमानी थे। इस स्वाभिमानी स्वभाव ने उनके काव्य को भी वैशिष्ट्य प्रदान किया है। बोधा के काव्य में जितनी मार्मिकता से प्रेम की पीर व्यंजित है उतने ही प्रभावशाली रूप में कवि का स्वाभिमान झलकता है। डॉ. कृष्णचन्द्र

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- IV, Issues-26, YEAR- Oct.-Dec.-2022

वर्मा उचित ही कहते हैं कि–उनकी नीतियोक्तियों में यही स्वाभिमान, यही लापरवाही और दिल की मस्ती मिलेगी, ऐसी उक्तियों में सांसारिक सत्यों का सीधा वर्णन हुआ है। बोधा तरंगी जीव थे, स्वाभिमान की प्रतिष्ठा उनके जीवन की बहुत बड़ी सम्पदा थी, वो उसकी रक्षा करने के लिए किसी भी धनाड्य की उपेक्षा कर सकते थे। बड़ें से बड़ें और धनी से धनी व्यक्ति से वो समता की सम्मानपूर्ण भूमि पर ही मिल सकते थे। यही वह ऊंचा आदर्श है जिससे आज का समाज असाधारण रूप से च्युत जान पड़ता है। निसंदेह बोधा का स्पष्टवादी स्वभाव और स्वाभिमानी प्रकृति प्रशंसनीय है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास, रामचन्द्र शुक्ल, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण – 2011.
2. बोधा ग्रंथावली, संपादक विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, प्रथम संस्करण – 1974.
3. मानक हिन्दी कोश, संपादक रामचन्द्र वर्मा, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, 1971.
4. रीति स्वछंद काव्यधारा, डॉ. कृष्णचन्द्र वर्मा, कैलास पुस्तक सदन, ग्वालियर, प्रथम संस्करण – 1967.
5. रीति–काव्य की भूमिका, डॉ. नगेन्द्र, नेशनल पब्लिकेशन हाउस, नई दिल्ली,द्वितीय संस्करण – 1953.
6. रीति और रीतिमुक्त कवियों की प्रेम व्यंजना, डॉ. सन्तोष सेन, अक्षर पब्लिकेशन एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली, संस्करण– 2015.
7. हिन्दी साहित्य का इतिहास, संपादक नगेन्द्र, शिवानी आर्ट प्रेस शहदरा, दिल्ली, 66वां संस्करण – अक्टूबर 2018.
8. हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास, डॉ. बच्चन सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा. लि., दिल्ली, संशोधित परिवर्धित संस्करण – 2006.
9. द पावर ऑफ माइंडफुल लर्निंग, एलेन जे लैंगर, द कैफो लाइफलॉग बुक, संस्करण –1997.

*****